INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

गाँधी और अंबेडकर के बीच वैचारिक मतभेद–एक तुलनात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक

डॉ0 मुनीष कुमार गोविंद
कुल सचिव
आईसेक्ट विष्वविद्यालय
हजारीबाग झारखण्ड

शोधार्थी

मिथिलेश कुमार
इतिहास विभाग
नामांकन क्रमांक –AUJ211886
आईसेक्ट विष्वविद्यालय
हजारीबाग – झारखण्ड
E - mail - mk14011983@gmail-com,

शोध – सारांश

तात्कालीन भारतीय समाज में 20 वीं शदी के आरंभ से ही महात्मा गाँधी और डॉ0 भीमराव अंबेडकर के बीच वैचारिक मतभेद जाति व्यवस्था के उन्मूलन, अस्पृश्यता निवारण के तरीकों एवं दलितों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को लेकर थे। गांधी जी वर्ण व्यवस्था में सुधार के पक्षधर थे जबकि अंबेडकर जाति व्यवस्था के पूर्ण विनाश और संवैधानिक अधिकारों की वकालत किया करते थे । एक ओर जहां गांधी जी हरिजन व्यवस्था में सुधार लाना चाहते थे। वहीं डॉ0 भीमराव अंबेडकर जाति व्यवस्था के पूर्ण उन्मूलन और संवैधानिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। यह संघर्ष मुख्य रूप से सामाजिक समानता के तरीकों को लेकर था।

गांधी और अंबेडकर के बीच मतभेद के कई कारण थे। जिनमें राजनीतिक प्रतिनिधित्व, पृथक निर्वाचन क्षेत्र,अस्पृश्यता एवं जातीयता का संपूर्ण उन्मूलन सामाजिक सुधार का दृष्टिकोण आदि प्रमुख थे। गांधी और अंबेडकर के बीच मतभेद की शुरुआत 1931–1932 ई0 में दलितों के लिए अलग निर्वाचन मंडल की मांग को लेकर शुरू हुआ। हालांकि 1932 ई0 में पूनः समझौता के बाद मतभेद कम हुए लेकिन उनके बीच सामाजिक न्याय और विकास के मॉडल को लेकर वैचारिक अंतर अंत तक बना रहा।

मुख्य शब्द (**Key words**) :– अस्पृश्यता, प्रतिनिधित्व, सामाजिक अधिकार, निर्वाचन क्षेत्र,उन्मूलन, वैचारिक मतभेद।

परिचय : –

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और डॉ0 भीमराव अंबेडकर दोनों ही भारतीय राजनीति के दो प्रमुख स्तंभ थे, जिन्होनें स्वतत्रंता, समानता और सामाजिक न्याय के लिए अपने जीवन के अंतिम समय तक संघर्ष किया। एक ओर जहां गॉधी जी ने अहिंसा और नैतिक सुधार के माध्यम से छुआछुत मिटाने की वकालत की वहीं दुसरी ओर अंबेडकर ने दलितों के उत्थान के लिए कानूनी अधिकारों,संवैधानिक सुरक्षा और जाति व्यवस्था के पुर्ण उन्मूलन पर जोर दिया।

गांधी जी ग्रामस्वराज एंव सुधारवादी व्यवस्था के पक्षधर थे फिर भी यदि अध्ययन के दृष्टिकोण से देखें तो दोनों के लक्ष्य एक ही थे परंतु तरीके अलग– अलग थें।

गॉधी और अंबेडकर के वैचारिक दृष्टिकोण –

- दोनों ने मिलकर अस्पृश्यता को मिटाने का कार्य किया जिसके परिणामस्वरूप संविधान में अनुच्छेद–17 (अस्पृश्यता का अंत) शामिल किया गया।
- दोनों ही समाज के सबसे निचले तबके के उत्थान और सामाजिक समानता के पक्षधर थे।
- गाँधी जी विकेंद्रीकृत शासन और ग्राम स्वराज के सर्मथक थे जो ग्रामीण आत्मनिर्भरता पर आधारित था। जबकि अंबेडकर एक मजबूत केंद्रीकृत संसदीय लोकतंत्र और आधुनिक संवैधानिक ढांचे के सर्मथक थे। उन्होनें दलितों के लिए अलग प्रतिनिधित्व एंव पृथक निर्वाचन मंडल की मांग की थी।
- गाँधी जी हृदय परिवर्तन एंव अहिंसक आंदोलनों पर भरोसा करते थे।
- अंबेडकर दलितों एंव पिछडों के कानूनी अधिकारों, शिक्षा और समानता को प्रमुख साधन मानते थे।
- गांधी जी ईश्वर, नैतिकता और आध्यात्मिक मूल्यों में अटुट विश्वास रखते थे जबकी अम्बेडकर तर्कसंगतता और समानता के सर्मथक थे। हिन्दु धर्म में सुधार की संम्भावना न देख उन्होने 1956 ई0 में बौद्ध धर्म अपना लिया।
- गाँधी जी ने हिन्दु धर्म के भीतर रहकर ही जातिव्यवस्था एवं वर्णव्यवस्था में सुधार चाहते थे। उन्होने दलितों को 'हरिजन' (ईश्वर की संतान) नाम दिया और इसे उन्होने एक नैतिक एवं धार्मिक सुधार माना। जबकी अम्बेडकर ने जातिव्यवस्था को अन्नायपूर्ण मानकर इसके पूर्ण उन्मूलन के हिमायती थे। उन्होने इसे भेदभाव का मूल कारण मानकर संवैधानिक और कानूनी उपायों पर जोर दिया।

गाँधी और अम्बेडकर के बीच वैचारिक मतभेद

महात्मा गाँधी और डॉ0 भीमराव अंबेडकर के बीच वैचारिक मतभेद की शुरूआत मुख्य रूप से लंदन में आयोजित **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 1931 ई0** के दौरान खुलकर सामने आये। इस सम्मेलन में दलितों के लिए पृथक निर्वाचन मण्डल की मांग पर दोनों के बीच तिखा टकराव देखने को मिला। जिसे बाद में 1932 ई0 के **पुना पैक्ट** के माध्यम से सुलझाया गया। चूकि महात्मा गाँधी दलितों को अल्पसंख्यक समुदाय मानने को तैयार नहीं थे और डॉ. भीमराव अम्बेडकर अंत तक अपनी इस माँग पर टिके रहे कि दलितों को भी स्वतंत्र मताधिकार का हक मिलना चाहिए। अंततः **20 अगस्त 1932 को ब्रिटिष प्रधानमंत्री रैमसे मैकडोनाल्ड** नें कम्युनल अवार्ड की घोषणा की जिसके तहत दलीतों को पृथक निर्वाचन मण्डल का अधिकार मिला।

इसमें कोई संदेह नहीं की गाँधी जी और डॉ. अम्बेडकर दोनों हीं भारतीय राजनीति के प्रमुख स्तम्भ थे और दोनों ने मिलकर दलीतों के उत्थान के लिए कार्य किया परंतु फिर भी

उनके बीच कुछ ऐसी परिस्थितियाँ बनी जिसने वैचारिक मतभेद को जन्म दिया जिसे प्रमुख बिन्दुओं से दर्शाया जा सकता है : –

1. अस्पृश्यता
2. अहिंसा
3. मंदिर प्रवेश
4. धार्मिक व्यवस्था
5. धर्म परिवर्तन
6. विधान मण्डल में दलीतों को उचित उपस्थिति
7. मनुस्मृति
8. पुना पैक्ट आदि।

साहित्यिक अवलोकन (Review of Literature)

आधुनिक भारतीय इतिहास के अधिकाशतः पुस्तकों में संदर्भित शोध विषय के बारे में पर्याप्त चर्चा है। इस शोध प्रस्ताव को प्रस्तुत करने के क्रम में मैंने पुर्व में उपलब्ध राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी जी एंव डॉ. भीम राव अंबेडकर से संबंधित कुछ साहित्यों का अवलोकन किया। जिसमें अंबेडकर द्वारा लिखित – गॉधी और गॉधीवाद,1970 का अध्ययन किया। इस पुस्तक के माध्यम से गॉधी जी की विचारधारा,दर्शन तथा जाति व्यवस्था के प्रति उनके दृष्टिकोण की आलोचना की गई है। इसी प्रकार एक और पुस्तक (The Ambedkar- Gandhi Debate) है जो भारतीय समुदाय और न्याय को लेकर गॉधी और अंबेडकर के बीच वैचारिक मतभेदों की गहराई से व्याख्या करती है। डॉ भीम राव अंबेडकर द्वारा 1936 में लिखित एक अन्य पुस्तक जाति प्रथा का उन्मुलन (Annihilation of Caste) एक प्रसिद्ध है, जिसमें उन्होनें भारतीय समाज से जाति आधरित भेदभाव, असमानता और छुआछुत को पुरी से खत्म करनें तथा समानता आधारित समाज की स्थापना करनें की वकालत की है। वहीं महात्मा गॉधी ने डॉ. अंबेडकर के वैचारिक मतभेदों विशेषकर जाति व्यवस्था और दलित अधिकारों पर कोई विशिष्ट पुस्तक नहीं लिखी परन्तु उन्होनें 'हरिजन' पत्रिका –1937, यंग इंडिया –1928 एंव मेरे सपनों का भारत (संकलन) के माध्यम से अपनें विचारों को स्पष्ट किया। गॉधी जी वर्ण व्यवस्था में सुधार चाहते थे जबकि अंबेडकर उसका पुर्ण उन्मुलन।

षोध प्रविधि (Research Methodology)

अपने इस शोध कार्य हेतू ऐतिहासिक विधि के अंर्तगत वर्णात्मक एंव विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा साथ प्राथमिक एंव द्वितीयक स्त्रोतों, विभिन्न पुस्कालयों, सग्रहालयों एंव इंटरनेट का सहारा लिया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोतों के रूप में गॉधी जी एवं अंबेडकर द्वारा लिखित पत्र, पत्रिकाओं तथा आत्मकथाओं आदि का सहारा लिया जाएगा। वहीं द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में अपने शोध कार्य को पुरा करने के लिए शोध विषय से संबंधित पुस्तकों, शोध पत्रों, जर्नलस, शोध आलेखों, विकिपिडीया एंव अन्य माध्यमों से शोध कार्य पुरा किया जाएगा।

अपेक्षित परिणाम एंव शोध कार्यो का सामाजिक महत्व (Expected outcome and social importance of the reseach work)

प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा यह निष्कर्ष अपेक्षित है कि गॉधी जी के अनुसार जाति व्यवस्था हिन्दू धर्म का एक हिस्सा है, औ इसे सुधारा जा सकता है। इसके विपरीत अंबेडकर ने जाति व्यवस्था के पुर्ण विनाश पर बल दिया क्योंकि यह छुआछुत और दमन का मूल कारण है। गॉधी जी सवर्णों के हृदय परिवर्तन से दलितों का उत्थान करना चाहते थे जबकि अंबेडकर का मानना था कि आत्मसम्मान, शिक्षा और राजनीतिक अधिकारों के बिना दलितों का उद्धार नहीं हो सकता।

निष्कर्ष :–(Conclusion)

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि गाँधी और अंबेडकर दोनों ही भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक इतिहास के स्तंभ थे। जहाँ गाँधी जीने नैतिक चेतना से राष्ट्र को जगाने का कार्य किया, वही अंबडेकर ने संवैधानिक ढाँचा देकर व्यवस्था में बदलाव किया। महात्मा गाँधी और डॉ० बी०आर० अम्बेडकर दोनों का अंतिम लक्ष्य एक न्यायपूर्ण, समानता पर आधारित और समावेशी भारत का निमार्ण करना था परन्तु उनके मार्ग भिन्न थे। अंततः गाँधी के बिना सामाजिक एकीकरण और अम्बेडकर के बिना संवैधानिक कानूनी समानता भारत के आधुनिक सामाजिक ढाँचे के लिए अधुरा होता।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. दास मोहन करमचन्द गाँधी, जात–पात का विनाश (Annihilation of Caste-1936)
2. दास मोहन करमचन्द गाँधी,कांग्रेस और गाँधी ने अधुतो के लिए क्या किया–Thacker & Com Mumbai - 1945
3. डॉ. अंबेडकर,अछुतः वे कौन थे और कैसे बने। गौतम बुक डिपो– नई दिल्ली– 1948
4. दास मोहन करमचन्द गाँधी, सत्य के साथ प्रयोग–(My Experiments with Truth) 1925-1929नवजीवन पत्रिका/नवजीवन ट्रस्ट।
5. हिन्द स्वराज– 1909 Indian Opinion Articles
6. आर. के. प्रभु. मेरे सपनों का भारत–1947 नवजीवन पब्लिाशिंग हाउस–अहमदाबाद।
7. दास मोहन करमचन्द गाँधी, दक्षिण अफ्रिका में सत्याग्रह– 1906 नवजीवन प्रकाशन हाउस–अहमदाबाद
8. दास मोहन करमचन्द गाँधी, सर्वोदय –1908 नवजीवन पब्लिशिंग हाउस–1934

9. दास मोहन करमचन्द गाँधी, हरिजन (साप्ताहिक पात्रिका) – यरवदा जेल–1933, पुणे।
10. अंबेडकरी, हिन्दुत्व और भारत–त्रिपाठी मुनीश सुरभि प्रकाशन, 31 Dec 2025, Jhansi (U.P)
11. डॉ. अंबेडकर और गांधी–कीरधनजय, पापुलर प्रकाशन–1954, मुंबुई।
12. गाँधी का उपवास– डॉ. वी.आर. अम्बेडकर–1930 नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद।
13. ठाकुर रघु गाँधी अम्बेडकर कितने दुर कितने पास, आकर मयूर विहार, दिल्ली।
14. प्रसाद द्वारका गुप्ता, महात्मा गांधी और अस्पृश्यता– समस्या और विकल्प ज्ञान भारती पब्लिकेशन–2012

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM